INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 8.031 (SJIF 2025)

महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य मेंसमालोचनात्मक अध्ययन

(A Critical Study of Mahatma Gandhi's Educational Thoughts in the Present Context)

भूपेन्द्र प्रताप सिंह
सहायक प्राध्यापक,
भुवन मालती कॉलेज ऑफ एजुकेशन्
मोतिहारी, पूर्वी चंपारण(बिहार, भारत)
E-mail: bhupendrasonu87@gmail.com

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/10.2025-54178836/IRJHIS2510011

शोध सारांश :

वर्तमान समय में सभी नागरिक शिक्षा प्राप्त कर सके इसके लिए समाज और सामाजिक व्यवस्थाओं ने प्राचीन समय से ही शिक्षा के विकास के लिए काफी प्रयास किए है। वर्तमान में भी देश ने शिक्षा का स्तर सुधारने के लिए सरकार द्वारा सभी के लिए शिक्षा का लक्ष्य रखा गया है शिक्षा की अनिवार्यता के दृष्किोण से शिक्षा का सार्वभौमिकरण किया गया। देश में सार्वभौमिक शिक्षा के क्षेत्र में अत्यधिक उन्नति हुई है। वर्तमान में विकास की अंधी दौड़ ने यह साबित कर दिया है कि उच्च स्तर की सभ्यता केवल भौतिक साधनों के उपलब्धि से सम्भव नहीं है, अपितु इसके लिए स्वावलम्बन, स्वनिर्भरता, चरित्र, मूल्य और आध्यात्मिक साधनों की भी आवश्यकता पड़ेगी। जिससे मानव प्रेम, दया, करूणा, परोपकार, दीन सेवा, दरिद्र नारायण, उद्धार जैसी प्रवृत्तियों का जन्म होगा। जो शिक्षा इन आध्यात्मिक मूल्यों को अपना लक्ष्य बनाने में सफल नहीं होती है वह स्वयं तो पथ भ्रष्ट हो जाती है और वह मनुष्य को भी गुमराह करती है और भौतिक साधनों की प्रचुरता में भी उसके विनाश का कारण बनती है। परन्तु यह भी सत्य है कि मानव जीवन केमौलिक आवश्यकताओं के अभाव में नैतिक मूल्यों का कोई अर्थ नहीं रह जाता है और व्यक्ति स्वाभाविक रूप से हिंसा, द्वेष, घृणा, अन्याय, असत्य और क्रूरता जैसी नीच प्रवृत्तियों का शिकार बन जाता है। वर्तमान भारतीय शिक्षा का यही परिणाम दृष्टिगोचर हो रहा है, जिसका निराकरण वर्तमान भारतीय विचारकों के लिए टेढ़ी खीर बन गया है। यदि हमें वास्तविक रूप से अपना भौतिक विकास करना है तो उसे नैतिक, चारित्रिक और आध्यात्मिक विकास के साथ-साथ भारतीय शिक्षा व्यवस्था का अनुवर्ती बनाना ही पड़ेगा। इसलिये हमारी शिक्षा का उद्देश्य है कि ऐसी शिक्षा व्यवस्था का विकास करना जिसमें प्रत्येक व्यक्ति के लिये उपर्युक्त कार्य जुटाना। हमें अपने शैक्षिक साधनों का सर्वाधिक उपयोग करना है। परन्तु शिक्षा में व्यर्थता व गतिरोध जैसी समस्याएँ हमारे साधनों का अपव्यय सिद्ध हो रही है। अतएव प्राचीन शिक्षा-व्यवस्था का अनुशीलन कर आधुनिक शिक्षा की इन कमियों में सुधार की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द : *महात्मा गांधी, शैक्षिक विचार, समालोचनात्मक अध्ययन।*

1. प्रस्तावना:-

शिक्षा ज्ञानार्जन और व्यवहारात्मक प्रक्रिया के रूप में समाज में प्राचीन काल से प्रवाहमान रही है। शिक्षा जहाँ एक ओर व्यक्ति के उत्कर्ष के लिए कार्य करती है तो दूसरी ओर समाज संस्कृति और राष्ट्र को विकास पथ पर अग्रसर करती है। स्वतन्त्र भारत देश में प्रचलित शिक्षा व्यवस्था ने वहाँ के नवयुवकों में अपने राष्ट्र के प्रति चरम निष्ठा और उत्सर्ग के साथ आर्थिक, राजनैतिक, वैज्ञानिक और तकनीकी

क्षेत्रो में अधिक विकास किया किन्तु साथ ही साथ यह भी सत्य है कि उसी शिक्षा व्यवस्था ने अपने देश की संस्कृति, सभ्यता, परम्परा, रीति रिवाज आदि को अपने मूल रूप में छोड़कर दूसरे की उच्च समझने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित भी किया है। परिणामस्वरूप भारतीयों में मानवीय उच्चादर्शों का लोप हो गया और मानवीय विनाश तथा उत्पीड़न साधारण न्याय बनकर रह गया। इतना ही नहीं मानव को अधिकाधिक ऐहिक सुख की प्राप्ति हेतु शिक्षा का मुख्य उद्देश्य भौतिक साधनों का अधिकाधिक विकास को स्वीकार कर लिया गया। इसी सुख ने मनुष्य को आपसी व्यवहार में भी घृणा, भय और आशंका की ऊँची, दीवार खड़ी कर दी और मनुष्य के चरित्र में नैतिकता और आध्यात्मिकता एक स्वप्न की वस्तु मात्र रह गयी। यही कारण है कि आज अधिकांश विद्वान और विचारक भौतिक उत्थान के साथ-साथ आध्यात्मिक उत्थान की भी चर्चा करते जा रहे हैं। हमारे मनीषीयों ने तो बहुत पहले ही आध्यात्मिक भौतिकवाद की कल्पना कर डाली है। इसीलिए राष्ट्रपिता, महान जननायक, आजादी के पुरोधा महात्मा गाँधी के शैक्षिक और दार्शनिक विचार प्रासंगिक प्रतीत हो रहे हैं। पाश्चात्य विचारकों से परे भारतीय शिक्षाविदों की यह मान्यता रही है कि यदि शिक्षा को एक उच्च स्तर की सभ्यता की सृष्टि सृजित करनी तथा उसकी रक्षा करनी है और जंगलीपन के सामयिक आवृत्तियों को रोकना है तो निश्चय ही शिक्षा को नैतिक, चारित्रिक मूल्यवान और आध्यात्मिक पक्षों पर आधारित करना चाहिए। वर्तमान में विकास की अंधी दौड़ ने यह साबित कर दिया है कि उच्च स्तर की सभ्यता केवल भौतिक साधनों के उपलब्धि से सम्भव नहीं है, अपितु इसके लिए स्वावलम्बन, स्वनिर्भरता, चरित्र, मूल्य और आध्यात्मिक साधनों की भी आवश्यकता पड़ेगी। जिससे मानव प्रेम, दया, करूणा, परोपकार, दीन सेवा, दरिद्र नारायण, उद्धार जैसी प्रवृत्तियों का जन्म होगा। जो शिक्षा इन आध्यात्मिक मूल्यों को अपना लक्ष्य बनाने में सफल नहीं होती है वह स्वयं तोपथ भ्रष्ट हो जाती है और वह मनुष्य को भी गुमराह करती है और भौतिक साधनों की प्रचुरता में भी उसके विनाश का कारण बनती है। परन्तु यह भी सत्य है कि मानव जीवन के मौलिक आवश्यकताओं के अभाव में नैतिक मूल्यों का कोई अर्थ नहीं रह जाता है और व्यक्ति स्वाभाविक रूप से हिंसा, द्वेष, घृणा, अन्याय, असत्य और क्रूरता जैसी नीच प्रवृत्तियों का शिकार बन जाता है। वर्तमान भारतीय शिक्षा का यही परिणाम दृष्टिगोचर हो रहा है, जिसका निराकरण वर्तमान भारतीय विचारकों के लिए टेढ़ी खीर बन गया है। यदि हमें वास्तविक रूप से अपना भौतिक विकास करना है तो उसे नैतिक, चारित्रिक और आध्यात्मिक विकास के साथ-साथ भारतीय शिक्षा व्यवस्था का अनुवर्ती बनाना ही पड़ेगा। परन्तु जब तक देश में बेकारी विद्यमान है, शिक्षा पर होने वाला व्यय सार्थक नहीं रहता। प्राचीन से लेकर आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में ऐसी कई चुनौतियाँ व्याप्त है, जो शिक्षा के वास्तविक लक्ष्यों की प्राप्ति में बाधाकारक है। इसी कारण प्राचीन और आधुनिक शिक्षाएँ आत्म-निर्भरता, उत्तरदायित्व एवं प्रोत्साहन पैदा करने में असमर्थ है। इस दृष्टि से इसमें आमूल-चूल सुधार लाने चाहिए। शिक्षा द्वारा मनुश्य में अपनी आजीविका कमाने एवं अपनी आय बढ़ाने का सामर्थ्य विकसित होना चाहिए। शिक्षा तभी निवेश बनती है जब उसे भली प्रकार योजना-बद्ध किया जाये तथा पूंजीकरण का अधिकाधिक लाभ प्राप्त हो। भारत जैसे विकासशील देश के लिए शिक्षा पूंजीकरण के रूप में लाभकारी सिद्ध हो। देश की बेकारी को दूर करें एवं मानव-शक्ति के विकास की नई दिशाएँ खोजने में समर्थ हो। इसलिए देश की शिक्षा-व्यवस्था में व्याप्त चुनौतियों को पहचानने की आवश्यकता है। तभी देश में शिक्षा के सार्वभौमिकरण के वास्तविक लाभ प्राप्त होंगे।

2. साहित्यावलोकनः-

तिवारी, मृदुला(2022) ने प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण पर महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों का प्रभाव का अध्ययन किया। उक्त अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों का प्रभाव बालकों के नामांकन एवं ठहराव पर लिंग, जाति, परिवार की आय, परिवार के आकार, विद्यालय के क्षेत्र एवं स्थिति एवं इनके बीच की अंतक्रिया का सार्थक प्रभाव उसके नामांकन एवं

ठहराव पर पड़ता है। अनुसंधानकर्ता ने उक्त अध्ययन जानकारी संकलन प्रपत्र विद्यालय रिकार्ड एवं साक्षात्कार अनुसूची को उपकरण के रूप में प्रयोग करते हुए किया।

कुमार, अवधेश (2020) ने महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा का वर्तमानप्राथमिक शिक्षा पर प्रभाव का अध्ययन नामक शीर्षक से किया। इस अध्ययन के परिणामों से निष्कर्ष प्राप्त हुए कि उत्तर प्रदेश में शिक्षा के सार्वभौमिकरण हेतु कई योजनाओं का संचालनहुआ है। इन योजनाओं के संचालन के पश्चात् विद्यालय में शिक्षकों की संख्या एवं छात्रछात्राओं की नामांकन संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई है तथा प्राथमिक स्कूलों की मूलभूत सुविधाओं में अत्यधिक सुधार हुआ है। परन्तु महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा का वर्तमानप्राथमिक शिक्षा पर प्रभाव सार्थक पाया गया क्योंकि समय में प्राथमिक शिक्षा के निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति नहीं हो सकी है। इसीलिए महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा का वर्तमान प्राथमिक शिक्षा में अनुशीलन आवाश्यक माना जाता है।

गर्ग, अश्विनी (2020) ने वर्तमान प्राथमिक शिक्षा पर महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा की प्रासिगिकता का अध्ययन किया। अध्ययन के परिणामों से निष्कर्ष प्राप्त हुए कि वर्तमान प्राथमिक शिक्षा पर महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा की प्रासिगिकता अनिवार्य प्रतीत होती है। जबकि वर्तमान प्राथमिक शिक्षामें जहाँ निर्धारित मानदंडों के आधार पर विभिन्न शैक्षिक सुविधाएँ उपलब्ध कराईगई, वहीं बच्चों के नामांकन, ठहराव एवं गुणवत्तापरक शिक्षा हेतु विद्यालयों को पर्याप्त मात्रा में कक्षा-कक्ष, अतिरिक्त शिक्षक, स्वच्छ पीने का पानी, शौचालय, विद्यालय एवं शिक्षक अनुदान, नवाचार को प्रोत्साहन, विकलांग एवं सामाजिक, आर्थिक रूप से पिछड़े बच्चों के लिए विभिन्न प्रकार के प्रोत्साहन आदि दिये जा रहे हैं। फिर भी शैक्षिक गुणवत्ता की दिशा में आशानुरूप प्रगति नहीं हुई।

शारदा, जितेन्द्र (2017) ने प्राथमिक शिक्षा पर महात्मा गांधी के शैक्षिक विचार नामक शोध शीर्षक से अध्ययन किया। इस अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि वर्तमान प्राथमिक शिक्षा विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध नहीं हो पा रही। इससे विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति असंतोष की भावना पनप रही है। योग्य विद्यार्थी उच्च शिक्षा में प्रवेश तक प्राप्त नहीं कर पाते, क्योंकि वे साधनहीन परिवार से सम्बन्ध रखते हैं तथा शैक्षिक अयोग्यता विद्यार्थियों में बढ़ रही है जिससे कक्षाओं में फेल होने वाले विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि होती जा रही हैं। इस प्रकार देश का धन एवं प्रतिभा दोनों व्यर्थ हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त अध्ययन के अन्तर्गत देश में सार्वभौम शिक्षा के लक्ष्य प्राप्ति में व्यर्थता एवं गतिरोध की समस्या को प्रमुख कारण बताया गया है। इसी कारण प्राथमिक शिक्षा पर महात्मा गांधी के शैक्षिक विचार उचित प्रतीत होते

3. शोध अध्ययन का महत्व:-

वर्तमान समय में भारत की शिक्षा-व्यवस्था में कई चुनौतियाँ विद्यमान हैं, जो शिक्षा के सार्वभौमिकरण के मार्ग में बाधा उत्पन्न कर रहीं है। इन चुनौतियों को दूर किये बिना सार्वभौमिकरण का लक्ष्य प्राप्त करना संभव नहीं हैइसके अतिरिक्त विभिन्न अध्ययनों के निष्कर्षो से यह भी ज्ञात हुआ है कि शिक्षा के सार्वभौमिकरण की दिशा में अधिक प्रयास होने के कारण देश में शिक्षा की गुणवत्ता परअधिक ध्यान नहीं दिया गया, इस कारण देश में शिक्षा की गुणवत्ता की स्थिति अत्यंत चिंताजनक है। अतः महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समालोचनात्मक अध्ययन वर्तमान शिक्षा-व्यवस्था में विद्यमान इन चुनौतियों की पहचान करने हेतु यह अध्ययन उपयोगी सिद्ध होगा साथ ही इन चुनौतियों को दूर करने हेतु क्याक्या उपाय किए जा सकते हैं, इस हेतु शोध पत्र में महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किए है।

4. शोध समस्या कथन समालोचनात्मक अध्ययन महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

5. अध्ययन के उद्देश्य:-

1. महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना।

2. महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समालोचनात्मक अध्ययन करना।

3. प्राथमिक शिक्षा-व्यवस्था में विद्यमान चुनौतियों को दूर करने हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

6. महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारः-

निःसन्देह महात्मा गाँधी जी का यह कथन उनकी भौतिकतावादी विचारों का प्रमाणन प्रतीत होती है। गाँधी जी के शैक्षिक विचारों में आर्थिक समानता, प्रेम, अहिंसा, सत्याग्रह, स्त्री-पुरुष समानता, विकेन्द्रीकरण, संतुलित औद्योगीकीकरण, श्रम और पूंजी में वैवाहिक सम्बन्ध, शैक्षिक अवसरों की समानता तथा धर्मनिरपेक्षता एवं सर्वधर्मसमभाव जैसे तथ्यों के उपस्थिति उन्हें यथार्थवादी तथा सफल जनतान्त्रिक विचार के रूप प्रमाणित करते हैं। गाँधी जी की शिक्षा योजना महान राजनीतिक दर्शन और अनुभव तथा प्रयोग पर आधारित है जिसका उद्देश्य एक आदर्श समाज की स्थापना और विकास रहा है। महात्मा गाँधी जी के शिक्षा दर्शन पर जिन तीन महान विभूतियों के विचारों का प्रभाव परिलक्षित होता है। उनमें 'चाँद वाई रे' जिससे उन्होंने सत्य, अहिंसा और धर्म की दीक्षा प्राप्त की थी तथा दूसरा प्रभाव 'टालस्टाय' की प्रसिद्ध पुस्तक 'The Kingdom of God is Wisdom You' और 'Gospel of Love' के द्वारा प्राप्त हुआ जहाँ से उन्हें विश्व प्रेम और श्रम के मूल्य की शिक्षा प्राप्त हुई और इसी के साथ ही साथ उन्होंने व्यक्ति और समाज के अन्योन्याश्रित सम्बन्ध एवं श्रम की समानता का ज्ञान 'रस्किन' की पुस्तक 'Unto this Last' से प्राप्त किया था। इस प्रकार गाँधी का शैक्षिक दर्शन उपरोक्त तीनों विद्वानों के विचारों से ओत-प्रोत होकर परिपूर्णता को प्राप्त हुआ। महात्मा गाँधी जी ने अपने अनुभवों और अपने अथक प्रयासों और प्रयोगों के आधार पर शिक्षा सम्बन्धी जो भी विचार प्रतिपादित किये वही आगे चलकर महात्मा गाँधी के शिक्षा दर्शन के रूप प्रचलित हो गये। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी के इन्हीं शैक्षिक विचारों के आधार पर उन्हें न केवल भारत का अपितु विश्व के एक महान शिक्षा मनीषी और शिक्षा दार्शनिक के रूप में स्वीकार किया जाता है। डॉ. एम.एस. पटेल ने गाँधी जी के समन्यवादी शिक्षा दर्शन पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा है कि उनका शिक्षा-दर्शन अपनी योजना में प्रकृतिवादी है, उद्देश्यों में आदर्शवादी है तथा पद्धति एवं कार्यक्रम में प्रयोजनवादी है। (His Philosophy of Education is naturalistic in its seeting, Ideolistic in its aims and pragmatic in its method and programme of Work).

7. महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समालोचनात्मक अध्ययनः-

महात्मा गाँधी राष्ट्रीय शिक्षा उन्नायकों की श्रेणी ऐसे विचारक रहे हैं जिन्होंने शिक्षा को जनकल्याण और उद्धार का सर्वाधिक शक्तिशाली अस्त्र के रूप में प्रतिवेदित किया है। गाँधी जी ने वस्तुतः शिक्षा के सभी स्तरों और सभी के लिए शिक्षा के प्रावधानों पर बल दिया। गाँधी जी के शैक्षिक विचार जो 1939 में बेसिक शिक्षा योजना के माध्यम से प्रतिस्फुटित किये गये थे वे आज लगभग 85 वर्ष बाद राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कमोवेश अंगीकृत किये जा रहे हैं। गाँधी जी ने पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, व्यावसायिक, प्रविधिक तकनीकी, कौशलपूर्ण, स्त्री शिक्षा, जन शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा इत्यादि आयामों पर विस्तृत प्रकाश डाला है। महात्मा गाँधी जी ने बेसिक शिक्षा योजना में प्रारम्भिक शिक्षा की रूपरेखा प्रस्तुत किया था उनका मानना था कि वर्तमान समय में, विशेष रूप से सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि के करोड़ों बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा उपलब्ध नहीं है। इसलिए उनके लिए प्रारम्भिक स्कूली शिक्षा की व्यवस्था सुनिश्चित किया जाना चाहिए। गाँधी जी ने शिक्षा के विषय वस्तुओं में उन तथ्यों कोशामिल करने पर बल दिया जिसमें भावी नागरिकों में संवेदना, शिष्टाचार और सहयोग की भावना का विकास किया जा सके। बेसिक शिक्षा योजना में

इसीलिए उन्होंने खेल आधारित शिक्षा, नैतिकता और चरित्र के विकास के लिए कहानियों और नाटकों का प्रदर्शन तथा सहयोग के लिए सामूहिक सेवा कार्यों पर बल दिया था महात्मा गाँधी जी ने बेसिक शिक्षायोजना में पूर्व प्राथमिक स्तर से ही शिक्षा को भारतीय वातावरण के अनुरूप भारतीयों के लिए शिक्षा व्यवस्था पर बल दिया था। यह शिक्षा अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था के विरोध में भारतीयों के लिए स्वदेशी शिक्षा थी। गाँधी जी ने उस समय महसूस किया था कि प्रचलित शिक्षा व्यवस्था से भारतीयों का वास्तविक विकास ही हो सकेगा। महात्मा गाँधी जी ने सर्वजन शिक्षा पर बल दिया और सभी के लिए शिक्षा की पहुँच बनाने के लिए प्रसारित रहे। उनका मानना था कि सबको शिक्षित करके ही देश अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकेगा। बेसिक शिक्षा योजना के प्रणेता महात्मा गाँधी जी ने बालकों की सशक्त एवं गुणवत्तापरक शिक्षा के लिए पूर्व प्राथमिक स्कूलों एवं संस्थानों की स्थापना पर बल दिया था और कहा था कि पूर्व स्कूली शिक्षा से बालकों में शिक्षा की नींव मजबूत की जा सकती है। बेसिक शिक्षा योजना में महात्मा गाँधी ने बुनियादी शिक्षा और संख्या ज्ञान की पर्याप्तता पर बल दिया जिसमें सभी साक्षर करने और प्राथमिक स्तर पर संख्या ज्ञान के साथ लिखने, पढ़ने की योग्यता के विकास पर बल दिया। गाँधी जी ने बुनियादी शिक्षा के विकास पर बल देते हुए प्राथमिक स्तर पर अक्षर और संख्या ज्ञान की क्षमता विकास करने पर बल दिया था। वर्तमान समय में हमारी प्राथमिक शिक्षा का स्तर उत्तरोतर नीचे गिर रहा है। इस संदर्भ में विशेषकर प्राथमिक स्कूलों को मात्र दोषी नहीं ठहराया जा सकता है क्योंकि इस स्तर पर बच्चों की सर्वांगीण उन्नति के लिए पर्याप्त प्रयास नहीं किये जा रहे हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि जब तक बुनियादी शिक्षा की नींव दृढ़ नहीं होगी, शिक्षा रूपी भवन भी अस्थिर ही रहेगा। इसलिए प्राथमिक शिक्षा स्तर की नींव, जिसका आधार बुनियादी शिक्षा स्तर पर ही निर्भर होता है, उसे सुदृढ़ बनाए बिना शिक्षा के अन्य स्तरों में सुधार लाना बहुत ही कठिन कार्य होगा। यद्यपि प्राथमिक शिक्षा में सुधार हेतु उठाए गये पग के फलस्वरूप देश में साक्षरता का प्रतिशत प्रति वर्ष बढ़ रहा है। स्कूलों, कॉलेजों में विद्यार्थियों की नामांकन संख्या बढ़ाने के लिए देश में निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं, परंतु शिक्षा की गुणवत्ता पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। कई स्कूलों के दसवीं और बारहवीं कक्षा तक के बच्चे चौथी या पांचवीं कक्षा के स्तर का ज्ञान नहीं रखते। शिक्षा की गुणवत्ता की इस गिरावट के लिए स्कूली शिक्षाके ढाँचे में खामी तो एक बड़ा कारण है ही, लेकिन इसके लिए ऐसे अभिभावक भी जिम्मेदार है जो यह चाहते हैं कि किसी भी तरह से उनका बच्चा पास हो जाए। इन सब समस्याओं का समाधान केवल महात्मा गांधी जी की शैक्षिक विचारधारा में निहित है।

8. प्राथमिक शिक्षा-व्यवस्था में विद्यमान चुनौतियों को दूर करने हेतुसुझाव: -

प्राथमिक शिक्षा-व्यवस्था में विद्यमान चुनौतियों को दूर करने हेतु प्रस्तुत सुझावाओं को निम्नलिखित रूपों में स्पष्ट किया जा सकता है-

1. प्राथमिक शिक्षा-व्यवस्था में विद्यमान चुनौतियों में मूल्यांकन की प्रक्रिया प्रमुख है। जिसे शिक्षा की भांति सतत् किया जाना चाहिए, ताकि मूल्यांकन द्वारा विद्यार्थियों की क्षमताओं को भली प्रकार परख सकें एवं विद्यार्थियों की समस्याओं का निदान कर सके।

2. शिक्षा पर होने वाले खर्च का लाभ उसी समय प्रकट नहीं होता अपितु भावी के गर्भ में निहित रहता है। अतः सरकार द्वारा हमारे देश में शिक्षा के विकास हेतु उचित बजट का निर्धारण करना चाहिए।

3. पाठ्यक्रम को सादा एवं लचीला बनाने की जरूरत है। अधिक विषय, अधिक पुस्तकें, अधिक कापियाँ, गरीब समाज के लिये जरूरी नहीं। पाठ्यक्रम को व्यवहार्य, जीवन सम्बन्धी एवं जीवन उपयोगी बनाकर ही हम ज्यादा बच्चों को स्कूल में रख सकते हैं। पाठ्यक्रम को विद्यार्थी की आवश्यकताओं के अनुरूप ढालना चाहिए।

4. स्कूल का समय लचीला होना चाहिए। जहाँ पर गरीब परिवारों के बच्चे दिन के समय नहीं पढ़ सकते वहाँ उनके लिए सांध्य स्कूल लगाये

जाने चाहिये।

5. स्कूल में बच्चों के प्रति प्रेम और प्यार का वातावरण उन्हें स्कूल में रखने का सर्वोपयुक्त साधन है। स्कूल के प्रति बच्चे का लगाव गहरा तभी होगा यदि उसका स्कूल जीवन का अनुभव आनंददायक होगा।

7. अध्यापकों की समुचित स्थानों पर नियुक्तियाँ होनी चाहिए तथा सरकार को विद्यालय हेतु शिक्षण सामग्रीके वितरण पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

8. विद्यालयों में खेलों हेतु मैदान की व्यवस्था होनी चाहिए तथा छात्रों के स्वास्थ्य जाँच की व्यवस्था भी विद्यालय में होनी चाहिए।

9. शिक्षा हेतु विद्यार्थी के मन में अध्यापक को जिज्ञासा उत्पन्न करनी चाहिए। जब तक विद्यार्थी के मन में जिज्ञासा है, शिक्षा को वह अनायास ही ग्रहण करेगा।

10. शिक्षा के माध्यम से ही वास्तविक प्रजातंत्र की स्थापना हो सकती है। जिस प्रकार का प्रजातंत्र हम देश में चाहते हैं उसी का लघु प्रतिरूप हमें अपनी पाठशालाओं में रखना होगा

11. विश्व के सारे राष्ट्र एक दूसरे पर आश्रित हैं एवं सबकी भलाई में ही हमारी भलाई है। अंतर्राष्ट्रीयता की भावना द्वारा ही देश का विकास सम्भव है। इसलिए विद्यार्थियों में अंतर्राष्ट्रीयता की भावना का विकास करना चाहिए।

12. विद्यार्थियों को शिक्षित करने के साथ-साथ उसका शारीरिक, मानसिक, नैतिक विकास करना भी अपेक्षित होना चाहिए। उन्हें अपनी आजीविका कमाने योग्य बनाना है।

13. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने एवं विद्यालय का वातावरण रूचिकर बनाने के लिए विद्यालयों के समस्त शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने एवं विद्यालय का वातावरण रूचिकर बनाने के लिए विद्यालयों के समस्त शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाने चाहिए।

14. विद्यालयों में रोजगारपरक तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए। जिससे ग्रामीण नारी-समाज स्वरोजगार की ओर उन्मुख हो एवं अपनी आर्थिक और सामाजिक स्थिति में सुधार कर सके।

15. शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु प्राथमिक स्तर एवं अन्य स्तर पर पाठ्यक्रम, अध्यापन विधियाँ आदि में सतत् समयानुसार परिवर्तन की आवश्यकता है।

9. शोध निष्कर्ष:-

देश में शिक्षा के सार्वभौमिकरण हेतु तीव्र गति से प्रयास किए जा रहे हैं तथा समुचित शिक्षा जन-जन तक पहुँचे, यह सुनिश्चित करने का काम शिक्षा-व्यवस्था का है। महात्मा गाँधी जी ने बालकों की सशक्त एवं गुणवत्तापरक शिक्षा को एक उन्नत समाज और शक्तिशालीदेश के निर्माण के लिए सर्वप्रथम दायित्व माना है। वास्तव में इन समस्याओं के निदान की कुंजी वस्तुतः शिक्षा-व्यवस्था के ही पास है, किंतु हमारी शिक्षा-व्यवस्था ही स्वयं तनावग्रस्त है। हमारी शिक्षा-व्यवस्था एक जटिल जाल में फंसी है, जिससे निकलना मुश्किल हो रहा है। उससे निकलने के लिए छोटे-मोटे सुधार पर्याप्त नहीं है, आमूल-चूल परिवर्तन किए जाने चाहिए। इस भ्रमजाल में पड़े रहना कि हमारी शिक्षा-व्यवस्था अति उत्तम है, इसमें मात्र छोटे-मोटे सुधारों की ही आवश्यकता है, आवश्यकता है हम महात्मा गाँधी जी की बुनियादी और सशक्त एवं गुणवत्तापरक शिक्षा का मौलिक चिंतन करें, उसे अपनी शिक्षा-व्यवस्था में पुनर्परिभाषित करें और आधारभूत ठोस कदम उठाएँ। सिर्फ आलोचना से और यथार्थ को नकारने से परिस्थितियाँ नहीं बदलती। शिक्षा के सार्वभौमिकरण का वास्तविक लाभ उस समय प्राप्त होगा, जब

शिक्षा समाज में व्याप्त समस्याओं के समाधान का मार्ग प्रदान करें एवं जीवन में सामंजस्य लाए। व्यक्ति समाज और देश के निर्माण का आधारभूत माध्यम शिक्षा ही है। हमारी शिक्षा-व्यवस्था ही हमें वैसा भविष्य दे सकती है, जैसा हम चाहते हैं। यद्यपि हमारी शिक्षा-व्यवस्था अधिकाधिक लोगों को साक्षर बनाने का अथक प्रयास कर रहीं है, व्यापक तौर पर शिक्षित वर्ग तैयार कर रही है, समाज और देश की प्रगति में यथासंभव सहयोग करने के लिए प्रतिबद्ध और प्रयत्नशील है, तथापि अपने मूल उद्देश्य पर खरा क्यों नहीं उतर पा रही, यह एक गहन चिंतन का विषय है। शिक्षा-व्यवस्था का सर्वप्रमुख उद्देश्य है विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास कर, योग्य और ज्ञानवान नागरिक देकर, समाज और देश के निर्माण में सहयोग करना। शिक्षा व्यवस्था के निर्माण की प्रक्रिया में चिंतन व्यापक होना चाहिए और सत्ता का प्रभाव सीमित। शिक्षा-व्यवस्था सत्ता-निरपेक्ष होनी चाहिए। जैसे न्याय विभाग सरकार से स्वतंत्र है वैसे ही शिक्षण विभाग भी सरकार से स्वतंत्र होना चाहिए आवश्यक है हम व्यक्ति, समाज और देश के निर्माण के उद्देश्य को सामने रखकर शिक्षा-व्यवस्था पर गहन चिंतन करें और यह समझने का प्रयास करें कि शिक्षा के मूलभूत उद्देश्यों को प्राप्त करने में हम असफल क्यों हो रहें। इसके लिए अथक प्रयास की आवश्यकता हैतथा शिक्षा-व्यवस्था में व्याप्त इन चुनौतियों को दूर करने के पश्चात् शिक्षा के सार्वभौमिकरण के वास्तविक लाभ अवश्य प्राप्त होंगे तथाहम अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे। इसलिए वर्तमान समय में भी महात्मा गांधी के शैक्षिक विचार प्रासंगिक है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची:

1. सिंह, सुनीता (2015), "शिक्षा में नवीन प्रवृत्तियाँ एवं नवाचार", अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
2. शर्मा, राजकुमारी (2006), महात्मा गांधी की बेसिक शिक्षा, राधा प्रकाशन, आगरा।
3. बन्ना, दीनानाथ (2014), प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली। महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा का स्वरूप",
4. मोहन, मदन (1994), "प्रचीन शिक्षा का विकास और समस्याएँ", कैलाश प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. भटनागर, सुरेश (1996), "आधुनिक एवं प्रचीन शिक्षा और उसकी समस्याएँ", सूर्या पब्लिकेशन्स, मेरठ।
6. त्यागी, गुरसरनदास (2015), "प्रचीन शिक्षा का इतिहास एवं विकास", अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
7. त्यागी, जी. एस.डी. (1997), " महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा", विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
8. तरूण, एच. (2000), शिक्षा प्रणालियाँ", प्रकाशन महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा तथा विश्व की संस्थान, नई दिल्ली।
9. पाठक, पी.डी. (2007), पुस्तक मन्दिर, आगरा। महात्मा गांधी की बेसिक शिक्षा योजना, विनोद
10. पाण्डेय, रामशकल एवं करूणा शंकर मिश्र (2010), "प्रचीन शिक्षा की सम-सामयिक समस्याएँ", अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।